एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भिण्डी की वैज्ञानिक तरिके से खेती

(*डॉ. डी. सी. मीणा[1], डॉ. जे. के. मीणा[2] एवं डॉ. प्रियंका कटारा[3])
[1]सहायक प्रोफेसर, सुरेश ज्ञान विहार युनिवर्सिटी, जयपुर-302017
[2]सहायक प्रोफेसर, महात्मा ज्योति राव फुले युनिवर्सिटी, जयपुर-302019
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (हॉर्टिकल्चर), कृषि विज्ञानं केंद्र, फलोदी (जोधपुर-।।)-342301
*dcmeena1989@gmail.com

भारत की भिण्डी एक लोकप्रिय सब्जी हैं भिण्डी को मुख्यतः लोग ओकरा या लेडीज फिंगर के नाम से भी जानते है। भिण्डी में मुख्य रूप से कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस के अतिरिक्त विटामिन– 'ए', बी, सी, थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाये जाते है। भिण्डी में विटामिन ए व सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है। भिण्डी में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। औषधि के रूप में यह दिल, दिमाग व पेट से पीड़ित व्यक्तियों के लिए अधिक लाभकारी होती है। भिण्डी की अगेती फसल लगाकर किसान भाई अधिक लाभ अर्जित कर सकते है।

बुवाई का समय– वर्षाकालीन भिण्डी की बुवाई जून–जुलाई में तथा ग्रीष्मकालीन की बुवाई फरवरी–मार्च में की जाती है। यदि भिण्डी की फसल लगातार लेनी है तो तीन सप्ताह के अंतराल पर फरवरी से जुलाई के मध्य अलग–अलग खेतों में भिण्डी की बुवाई की जा सकती है।

भूमि व खेत की तैयारी–भिण्डी के लिए दीर्घ अवधि का गर्म व नम वातावरण श्रेष्ठ माना जाता है बीज उगने के लिए 25–35^0 डिग्री से$_0$ग्रे$_0$ तापमान उपयुक्त होता है। भिण्डी को उत्तम जल निकास वाली सभी तरह की भूमि में लगाया जा सकता है। भूमि का पी एच मान 7.0 से 7.8 होना उपयुक्त रहता है। भूमि की दो–तीन बार जुताई कर भुरभुरी कर तथा पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए।

उत्तम किस्में–काशी सातधारी, काशी क्रांति, काशी विभूति, अरका अनामिका, प्रभनी क्रांति, काशी प्रगति, पुसा मखमली पंजाब–7, पूसा सावनी, पूसा ए–4, प्रभाव जे0के0 हरित।

बीज की मात्रा–गर्मी के मौसम के लिए 18–20 कि$_0$ग्रा$_0$/हेक्टेयर व वर्षा के मौसम में 10–20 कि$_0$ग्रा$_0$/हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

बुवाई का तरीका–वर्षाकालीन भिण्डी के लिए कतार से कतार दूरी 40–45 से$_0$मी$_0$ एवं कतारों में पौधे की बीच 25–30 से$_0$मी$_0$ का अंतर रखना उचित रहता हे। ग्रीष्मकालीन भिण्डी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 25–30 से$_0$मी$_0$ रखनी चाहिए। बीज की 2 से 3 से$_0$मी$_0$ गहरी बुवाई करनी चाहिए। बुवाई से पूर्व भिण्डी के बीजों को 3 ग्राम मेन्कोजेब कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। पूरे खेत को उचित आकार की पट्टियों में बांट ले जिससे कि सिचाई करने में सुविधा हो। वर्षा ऋतु में जल भराव से बचाव हेतु उठी हुई क्यारियों में भिण्डी की बुवाई करना उचित रहता है।

खाद व उर्वरक–खाद व उर्वरक की मात्रा भूमि में उपस्थित पोषक तत्वों की निर्भर करती है। 15 से 20 टन सडी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 25 से 30 दिन पूर्व खेत में मिला लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश की क्रमशः 80:60:60 प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व आखिरी जुताई के समय देना चाहिए तथा खड़ी फसल में 0 से 60 किग्रा$_0$ नत्रजन को दो बराबर भागों में बांटकर पहली मात्रा बुवाई के 3–4 सप्ताह बाद पहली निराई गुड़ाई के समय तथा दूसरी मात्रा फसल में फूल बनने की अवस्था में देना लाभ्रप्रद है।

सिंचाई–सिंचाई मार्च में 10–12 दिन, अप्रैल में 7–8 दिन और जून–जुलाई में 4–5 दिन के अन्तर पर करें। बरसात में यदि बराबर वर्षा होती है तो सिंचाई की आवश्यकता नही पड़ती है।

निराई व गुड़ाई–नियमित निंदाई–गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बोने के 15–20 दिन बाद प्रथम निंदाई–गुड़ाई करना जरूरी है। खरपतवार नियंत्रण हेतु रासायनिक कीटनाशकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। खरपतवारनाशी फल्यूक्लरेलिन के 1.0 किग्रा$_0$ सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त नम खेत में बीज बोने के पूर्व मिलाने से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

कटाई व उपज–भिण्डी की तुड़ाई हर तीसरे या चौथे दिन आवश्यक हो जाती है। भिण्डी को फूल खिलने के 5–7 दिन के भीतर अवश्य तोड़ लेना चाहिए। स्थानीय बाजार के लिए सुबह तुड़ाई करके बाजार में भेज सकते है लेकिन दूरस्थ बाजार के लिए शाम के समय तुड़ाई करके भिण्डी को जूट के बोरों या टोकरी में भरकर सुबह बाजार में भेजते है।

प्रमुख रोग तथा उनका नियंत्रण

1. **पीत शिरा मौजेक**–यह भिण्डी का सबसे भयंकर रोग है। यह रोग विषाणु के द्वारा फैलता है। पत्तियॉ और फल पीले पड़ जाते है फल बेडोल व कठोर हो जाते है।

नियंत्रण–

1. रोगी पौधों को उखाड़कर जला दे।
2. फसल पर एसीफेंट (0.15) या इमिडाक्लोप्रिड (0.3) छिड़काव करे।
3. रोग प्रतिरोधी किस्में– वर्षा उपहार, पंजाब केसरी एवं अरका अनामिका उगाएं।

2. **पाउडरी मिल्डयू रोग**–यह रोग इरीसाईफी सिनकोरेसियरम नामक फॅफूदी के द्वारा होता है। पत्तियों की निचली सतह पर सफेद चूर्ण जैसा पदार्थ जमा हो सकता है जिससे पत्तियॉ गीली होकर गिरने लगती है।

नियंत्रण–

1. इसके नियंत्रण हेतु 25 किग्रा$_0$/हेक्टेयर की दर से गंधक पाउडर का भुरकाव करे।

2. हेक्साकोनेजोल (0.05) या प्रोपीकोनाजोल (0.03) का दो से तीन बार 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करे।

प्रमुख कीट

तना एवं फल भेंदक कीट

इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है। जो कीट की सुंडियां बैगन की तरह ही भिण्डी फल में छेद करती है। इस कीट से ग्रसित फल आकार में टेड़े–मेड़े तथा सब्जी योग्य नही होते है। संक्रमित पौधे के शीर्ष भाग को ये सुडियां सीधे नुकसान पहुॅचाती है जिससे शीर्ष मुरझा जाता है।

नियंत्रण–

रोकथाम हेतु लक्षण देखते ही मैलाथियॅान 0.05 प्रतिशत या कार्बेरिल 0.1 प्रतिशत या 75–80 मि॰ली॰ स्पाईनोसैड 45 ई॰सी॰ को 200 लिटर पानी मे घोलकर प्रति एकड मे छिडकाव करे। इसे 15 दिन के अंतर पर तीन बार दोहराएं।

सावधानी– उपरोक्त दवाइयों के छिडकाव के 15 से 20 दिनों के बाद ही भिण्डी के फलो की तूडाई करनी चाहिए। फलो को तोडने के बाद शुद्व पानी के साथ साफ कर काम में ले लेवें।